International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.3 Jan – Feb 2023

प्रवासी कवयित्री पुष्पिता अवस्थी की कविता में 'माओरी' जनजाति की व्यथा

डॉ॰ अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी, अलायंस विश्वविद्यालय, बंगलोर
***Corresponding Author*- डॉ॰ अनुपमा तिवारी**
ईमेल –anupama.tiwari@alliance.edu.in
DOI- 10.5281/zenodo.7701293

सार :

प्रगति और आधुनिकता के इस दौर में भी आदिवासी समुदाय आज भी शोषित, पीडित और उपेक्षित हैं | राजनीतिक वर्ग स्वहित के लिये आदिवासियों को ढाल बनाकर कार्य साधते हैं परंतु अपना उल्लू सीधा होते ही उनका रुख, उनके प्रति परिवर्तित हो जाता है | जल, जंगल और जमीन के मालिक आदिवासी ही हैं जो कि आज भी अपनी अस्मिता को संजोकर रखे हुये हैं, ईमानदारी और प्रतिबद्धता के साथ | दूसरी ओर हमारा सभ्य और शिष्ट समाज है जो कि आदिवासियों के प्रति एक तरफ तो हेय दृष्टि रखता है, परंतु उनका अधिकार, जमीन और सम्पत्ति हडपने में उनका ईमान उन्हे अनुमति देता है | आदिवासी समूह नगरीय सभ्यता के कतिपय दोषों से मुक्त भी हैं, शायद इसीलिए निश्छल और स्वतंत्र हैं |

गौरतलब है कि आदिवासियों की समस्या विश्व में एक विशेष सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक विचार - विमर्श की बिंदु हो गयी है | "विश्व के पांचों महादेशों - एशिया, यूरोप , अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और आस्ट्रेलिया मे विभिन्न रूप में समस्यायें खडी होती गयीं हैं | उपनिवेशवाद के कारण समस्या जटिल हो गयी है क्योकि उपनिवेशी राष्ट्रीय शासन सत्ता अपनी ही सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ढांचों को थोपना चाहती है | इससे आदिवासियों के जीवन में औपनिवेषिक अतिक्रमण जारी है |"1 यह संघर्ष क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभी भी चल रहा है | यूरोप के विभिन्न देशों से गोरे लोग आकर आस्ट्रेलिया में बस गए और साथ ही स्थानीय आदिवासियों के जमीन पर अपना आधिपत्य जमाने लगे | गोरों की लोलुपता इतने में ही नहीं सिमटी, ये तो आदिवासियों की अस्मिता को ही समाप्त करने कि साजिश में जुट गये | जब भी किसी आदिवासी बच्चे का जन्म होता, उसे गोरों के घर पहुंचा देने की प्रथा चल पडी | इस प्रथा के चलते आदिवासी बच्चे अपनी भाषा और संस्कृति से विमुख हो कर उनकी दासता करने के लिये अभिशप्त हो गये | न्यूजीलैंड में अल्पसंख्या में निवास करने वाली "माओरी" जनजाति है, जिनकी कुल संख्या लगभग 885,000 है | माओरियों का स्थान न्यूजीलैंड, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका में मुख्य रूप से है | इनकी भाषा माओरी और अंग्रेजी है | प्रवासी कवयित्री पुष्पिता अवस्थी ने इनके उपर हो रहे अत्याचारों व अन्याय के प्रति चिंता जताई है | अपनी कविता 'माओरी ' में कवयित्री लिखती हैं कि -

माओरी आदिवासी
तुम्हारी अपनी मातृभूमि न्यूजीलैंड
न्यूजीलैंड नाम धारण करने से पहले कि
तुम्हारी अपनी मातृभूमि - मॉ सरीखी
धरती के जलकुंडों में नहाते
गरम स्रोतों में भोजन पकाते
उसकी नदियों में यात्राएं करते हुए घूमते थे
जंगल दर जंगल ।

यह विदित है कि आदिवासियों का जीवन वनों और पर्वतों के अंचल तक सीमित होता है | उनका जीवन प्रकृति के विभिन्न परिवर्तनों से तो प्रभावित होता ही है , उनके संस्कृति की सोच भी प्रकृति ही होती है | आदिवासी अपने जीवन मूल्यों को भी प्रकृति से ही ग्रहण करते हैं | अपरोक्ष रूप से पुष्पिता अवस्थी ने भी इसी बात कि प्रति पुष्टि की है कि – भौतिकता का आकर्षण केंद्र कुछ भी हो, देश कोई भी हो - अमेरिका, भारत, न्यूजीलैंड या फिर आस्ट्रेलिया, देशों के नामकरण से पूर्व ही धरती मानवजाति व वन्य प्राणियों की है | जंगल तपोभुमि है हमारे ऋषि - मुनियों की, जंगल देनदार है - तमाम औषधियों की | मानव का वह समुदय

जो सभ्य बनकर प्रबुद्ध समाज को निर्मित किये, वे वन से विलग हो गये और जो आज भी बिना अपनी आदम प्रवृत्तियों का परित्याग किये, उसी स्थान पर जीवन निर्वहन कर रहे हैं उनके लिये यह धरती माँ के समतूल्य है, बिना इस विवाद के कि वे किस जाति के हैं, उनका धर्म या इतिहास क्या है ? क्योकि आदिवासी कहीं का भी हो वह नदी, वन, जंगल, पहाडों का देवता होता है | आदिवासियों की सहज दिनचर्या भी वन और ऋतुओं पर निर्भर रहती है | उन्हीं के मध्य जंगलों में घूमते – भटकते वे अपना जीवनयापन करते हैं, बिना किसी आडम्बर, छल-प्रपंच, मिथ्या व द्वेष के | मानव द्वारा निर्मित सभ्य समाज व संस्कार को उन्होनें अस्वीकारा है | भोले व सहृदय आदिवासी शिष्ट मानव के क्रूर मन को समझ पाने मे असमर्थ होते हैं क्योकि कुटिलता उनके आचरण मे नही होती | उनकी इसी सहजता पर कवयित्री ने उन्हें आगाह किया कि

हिंसक पशुओं से परे थी
तुम्हारी मातृभूमि
फिर, तुमने क्यों विश्वास कर लिया ?
हिंसक पशुओं से भी अधिक हिंसक - मानव पशु
दांत, नाखून और देह - बल के अलावा
उनके पास थे हिंसक हथियार, बर्छे, भाले, बंदूक
लंगर डालने वाली रस्सी |

माओरी आदिवासियों का संक्षिप्त इतिहास यह है कि “ये बस्तियां किसी समय काफी खतरे में थीं, जब एक सनकी आर्टिस्ट ‘होरियातो गॉर्डोन रोबली ‘इन आदिवासी जनजाति के लोगों को मारकर, इनके सर को धड से अलग कर अपने साथ ले जाता और उन पर नक्काशी आदि करता |”2 (माओरी विकिपीडिया से) इस प्रकार यूरोप के गोरे मालिक माओरी आदिवासियों के मध्य पहुंचकर पहले उनके विश्वास पर खरे उतरने का स्वांग रचते हैं और फिर उनके साथ विश्वासघात करते हैं | पुष्पिता जी ने उसी पक्ष को उपर्युक्त पंक्तियों में व्यंगार्थ ढंग से उद्घाटित किया है, कि माओरी आदिवासियों को विश्वास का प्रतिफल जान देकर चुकानी पडती थी | उनके अस्तित्व की प्रतिरक्षा का दायित्व निभाने में कोई भी सक्षम नहीं था | जंगल में भटकते हुये उन्हे भयावह और हिंसक पशुओं से उतना अधिक खतरा नहीं था जितनी ठेस इनकी अस्मिता को मानव ने पहुंचायी | आदिवासियों के समूचे समाज को ही निर्मूल करने की मानव की मिमांसा, उसके पशुवत व्यवहार व भक्षक प्रवृत्ति को व्यक्त करता है | कवयित्री का आक्रोश और व्यंग्य इन पंक्तियों में प्रस्फुटित हुआ है कि - आदिवासियों के पास तो हथियार के रूप में सुरक्षा हेतु मात्र लम्बे दांत, नाखून और बल है जबकि संस्कारी मानव के पास तो इसके अतिरिक्त हिंसक जानलेवा हथियार शस्त्र हैं, भला निरीह आदिवासी अपनी सुरक्षा उनके सम्मुख कैसे कर पायेगा ?

मानव की निर्ममता को कोसते हुये पुष्पिता जी ने लिखा कि -

धरती हथिया कर
तुम्हारी पीढी को
मज़दूर की कुछ खुशनुमा नौकरियां थमाकर
बन बैठे हैं - मालिक
तुम्हारी मातृभूमि के।

विश्व के प्रत्येक कोने में आदिवासियों के अधिकारों एवं हितों के प्रति, सभ्य मनुष्य के पास संवेदना की कमी है, जिसके चलते वनों पर उनके परंपरागत अधिकारों को मान्यता देने के बजाय, उन पर या तो अत्याचार किया जाता है या फिर लालच देकर उनके साथ छल किया जाता है | सदियों से आदिवासियों की सम्पदा पर अपना आधिपत्य जमा कर और कुलीन मर्यादाओं के मिथ्या आडम्बर पर शेखी बघारने वाला समाज और उसके शिष्ट लोग आदिवासियों के अधिकारों को छीन कर उन्हे सिर्फ खानाबदोश ही नहीं, बल्कि अंदर से बेबुनियाद कर दे रहे हैं | मानव वंश के इस वर्ग की विडम्बना उत्तराधुनिक संदर्भ में भी अपनी पहचान में आदिम ही महसूस होती है, क्योकि इनके कार्यप्रणाली का अधिकार भी मानव अपनी मुट्ठी में रखता है | प्रलोभन देकर इनकी झोली में तुच्छ नौकरी की भीख डालता है, जिसका मालिक वह खुद ही बना रहता है | आदिवासियों की दोहरी विडम्बना है | एक ओर तो धर्म के पंडे और दुसरी ओर सत्ता के डंडे, उनके हक को छीनने पर तुले हुये हैं | झूठ और फरेब के ठेकेदार बनते जा रहे महाजनों के सामने उनका अस्तित्व शून्य बन रहा है | अपनी इच्छा - अनिच्छा और अधिकार के प्रति अवाज मुखर करना, सुसभ्य समाज के निर्णयों के विपरीत जाना होगा, अतः वे आज भी समाज मे वंचित और उपेक्षित ही हैं | पुष्पिता अवस्थी ने अपनी कविता के माध्यम से इन्हें जागरूक करने का प्रयत्न किया है -

माओरी संतानों
तुम्हारे पुरखों को बनाकर प्रतीक चिन्ह
अपने संग्रहालयों में सजाकर
स्वाभिमानी पुरखों की तस्वीरों को
किताबों में छापकर
तुम्हारे हक को बेच रहे हैं –
पर्यटकों की आंखों
और नई पीढी के दिमागों के लिए।

आदिवसियों की इंसानियत को स्वार्थ की दृष्टि से देखनेवाला समाज उनका उपभोक्ता ही बनना चाहा है | उनकी हर

हरकत को नगण्य मानने वाले लोग समाज में उनकी उपस्थिति को उपभोक्तावादी दृष्टि से आंकते हैं | यथार्थ यही है कि उनकी मौजूदगी हमेशा परिष्कृत नागरिक के पैरों तले ही रहती है | वे उनका भरपूर पोषण करते हैं और उन्ही के द्वारा अपना व्यवसाय भी चलाते हैं, कभी उनके पूर्वजों के तस्वीरों की प्रदर्शनी लगाते हैं तो कभी उनकी संस्कृति का नुमाइश पुस्तकों में कर, पर्यटकों की आंखों तथा नई पीढी के दिमागों अर्थात् शोध व शिक्षा के माध्यम से क्रय - विक्रय करते हैं | जिन आदिवासियों को भरपेट भोजन भी नसीब नहीं होता और उनकी स्थिति को देखकर किसी भी सभ्य व्यक्ति का मन द्रवित नहीं होता, उन्हीं आदिवासियों की विवशता पर बनायी गयी पेंटिंग बाजार में लाखों रुपए में बिक जाती है | यह सभ्य समाज की विडम्बना और आदिवासियों की लाचारी है | अपने वजूद को बचाये रखने के लिए वे तो अपंग, निरीह व असहाय हैं पर मानव अपनी लोलुपता से ग्रसित हो कर -

उजाड रहे हैं - जंगल
काट रहे हैं - वृक्ष
जगह - जगह लकडियों में बनाए हैं - तुम्हारे मुखौटे
वह फिर - धरती के नामकरण का स्थल हो
या सडक, या संसद, या संग्रहालय
या आकलैंड का स्काई - टावर ही क्यों न हो
जहॉ तुम्हारी कलाओं का नमूना
सिर्फ प्रदर्शन भर है – खाली विशिष्ट कुर्सी में
जो लकडी का सिंहासन है -
तुम्हारी प्रतिक्षा में माओरी संतानों ।

आदिवासी वर्तमान समय मे भी पिछडी पंक्ति के निवासी हैं, जिसकी प्रमुख कारण हमारी व्यवस्था है | विश्व भर में टॉवर्स तो बनाए गए हैं, बडे - बडे उद्योगपति भी हैं, लेकिन हर आदमी जिसको महात्मा गांधी सबसे अन्त वाला आदमी कहते थे, उस आदमी पर व्यवस्था कि दृष्टि नहीं गयी है | वैसे भी आदिवासी सभ्यता की दृष्टि से ओझल हैं और उनके लिए जो कानून बनाए गये हैं वह एक तरह से उन्ही के विरोध में है | इसका कारण यह है कि हमारी व्यवस्था का चरित्र जो कि जन विरोधी चरित्र है, यह व्यवस्था साधारण आदमी के हित में काम नहीं करती है | यह काम करती है - विडलाओं, उद्योगपतियों के लिए | जंगल के झोपड्पट्टी तक इनकी दृष्टि नहीं जाती | "आदिवासी जो कि जंगल में हैं, उनके हित में तो पुख्ता कानून बनता ही नहीं और यदि थोडा बहुत अधिकार मिल भी जाता है तो सभ्य समाज के भक्षक ही हावी हो जाते हैं |" 4 पुलिस वाले हैं वे भी उनका शोषण करते हैं, व्यापारी भी उनका ही दोहन करते हैं | विश्व के किसी भी क्षेत्र में आदिवासियों के पिछडेपन का जो कारण है, वह है जनतांत्रिक व्यवस्था | जनतांत्रिक व्यवस्था की व्याख्या की गई है कि - 'जनता द्वारा जनता के लिए 'लेकिन विडम्बना यह है कि आदिवासी बेचारे जनता में ही नहीं आते | विकास और बदलाव के नाम पर उनकी अस्मिता को तिरोहित करने कि साजिश भी चलती है - कभी जंगलों को उजाडकर, वृक्षों का अंधाधुंध कटाई कर तो कभी उनके कलाओं का नमूना दिखाकर | उनके दर्द को समझने वाले बहुत कम हैं | पुष्पिता अवस्थी ने माओरी जनजातियों को सचेत किया है | वर्तमान समय में मओरी जनजातियों की स्थिति मे अधिक परिवर्तन आया है | "1907 में न्यूजीलैंड में आजादी के बाद माओरियों को राष्ट्रीय अधिकार धीरे - धीरे प्राप्त होने लगे | आधुनिक एंग्लो माओरी न्यूजीलैंड में हैं |"5 इनके पूर्वजों के साथ जो भी अत्याचार हुआ था, उन सबके लिये यहाँ के राष्ट्रपति ने इनसे माफी मांगी है | एक तरह से भारत कि अपेक्षा विदेशों में इनकी अस्मिता और संस्कृति पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है | यह ध्यान आवश्यक भी है क्योकि भले ही इन्हें अज्ञानी, असभ्य और बर्बर की उपाधि से अभिहित किया जाए, परंतु ये ही प्रकृति के रखवाले हैं | "आदिवासियों का लिंगानुपात हम सभ्य और शिक्षित समाज से काफी अच्छा है, जबकि हम सभ्य और शिक्षित लोग हैं | ये भी सोचने पर मजबूर करता है | हम अपने अतीत को याद करें तो जिस आदिवासी मनुष्य से आज हम होमोसेपियंस आधुनिक मानव कहलाते हैं उसमें भी आदिवासियों का ही योगदान है |"6 आज आवश्यकता है कि आदिवासियों को उनकी आदिम स्थिति से बाहर निकाला जाए परंतु उनकी संस्कृति और सभ्यता की रक्षा करते हुये | उनके साथ सभ्य समाज को जुडना चहिए और उनके अधिकारों का मालिक उन्हें ही बनाना चाहिए | उनके भोलेपन का फायदा नहीं उठाना चाहिए | तब जाकर वसुधैव कुटुम्बकम कि परिकल्पना साकार हो पायेगी |

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. विश्व इंसाइक्लोपीडिया ज्ञान, माओरी पन्ने
2. माओरी विकीपीडिया
3. पुष्पिता अवस्थी - गर्भ की उतरन, पृ. सं. 112
4. जनकृति पत्रिका, जनवरी - फरवरी 2019 , पृ . सं. - 108
5. आधुनिक हिंदी साहित्य : चर्चित आयाम, सं. - सुनील बापू बनसोडे, लेख - हिंदी उपन्यासों में आदिवासी समाज / डॉ. एस . ए . सूर्यनारायण वर्मा, पृ . सं . 96
6. दलित जीवन का अधिकार और निर्मला पुतुल की कविता, लेखिका - मिनीप्रिया आर., पृ. सं. - 60